पाठ 9. गुरु नानकदेव

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ सिक्खों के प्रथम गुरु 'गुरु नानकदेव' जी के जीवन से जुड़ा है। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को नानक जी के बचपन तथा उनके द्वारा दिए गए संदेशों से अवगत कराना है।

पाठ का सारांश

गुरु नानकदेव जी का जन्म 15 अप्रैल 1469 को पाकिस्तान में लाहौर के पास तलवंडी नामक गाँव में हुआ था। बालक नानक बचपन से ही दूसरों के दुख देखकर परेशान हो उठते थे तथा उनके दुख दूर करने का भरसक प्रयत्न करते थे। नानक जब बड़े हुए तो उन्होंने लोगों को मिल-जुलकर रहने की सीख दी। उन्होंने लोगों को समझाया कि ईश्वर एक हैं और वे प्रत्येक प्राणी में तथा संसार के कण-कण में निवास करते हैं। गुरु नानकदेव जी के उपदेश एवं संदेश 'शबद' के रूप में गाए तथा सुने जाते हैं। गुरु नानकदेव जी का जन्मदिन 'गुरुपर्व' के रूप में मनाया जाता है।

अध्यापन संकेत

पाठ का वाचन करें फिर बच्चों को मौन वाचन करने के लिए प्रेरित करें। बच्चों से पाठ से संबंधित चर्चा कीजिए।

बच्चों को नानकदेव जी के बारे में बताएँ। दूसरों की सहायता करना अच्छी बात होती है। बच्चों को मिल-जुलकर रहने की शिक्षा दें। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताते जाएँ। बच्चों से पूछिए–

- ❖ बालक नानक ने माँ के दिए सारे पैसे गरीब लोगों को देकर सही किया या गलत। यदि तुम उनकी जगह होते तो क्या करते–क्या तुम वहाँ से आगे बढ़ जाते? या फिर उसमें से कुछ पैसे उन्हें देते और शेष बचे पैसों से सामान खरीदते?
- ❖ बच्चों को गुरुपर्व के बारे में बताएँ। उन्हें बताएँ 'शबद' क्या होते हैं।
- ❖ बच्चों को एकवचन तथा बहुवचन के बारे में बताएँ। आम बोलचाल में प्रयोग किए जाने वाले कुछ सरल शब्द बोलें और बच्चों से उनके बहुवचन रूप बताने को कहें। जैसे–पेंसिल–पेंसिलें, रोटी–रोटियाँ आदि।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।